cqUnsy[k.Mh yksdukV;ksa dk laxhr rijd v/;;u

संगीत विषय में पी एच0डी की

उपाधि हेतु शोध–प्रबन्ध की

प्रस्तावित रूपरेखा

'kks/kkfFkZuh %

नेहा श्रीवास्तव

funsZ'kd %
डॉ. (श्रीमती) नीतू गुप्ता
संगीत विभाग, कला संकाय

lg funsZ'kd %
प्रो0 (श्रीमती) रश्मि श्रीवास्तव
संगीत विभाग, कला संकाय

laxhr foHkkx] dyk ladk;
n;kyckx ,tqds'ku bULVhV~;wV ¼MhEM ;wfuoflZVh½]
n;kyckx vkxjk&282005
2020

Hkfedk

मानव, कला एवं सौन्दर्य के प्रति सदैव से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का रहा है। अपने आस–पास के वातावरण को एवं ईश्वर द्वारा रची गई रचना में जो कुछ भी व्याप्त है, उन सभी को स्वयं करने की चेष्टा उसके मन में सदैव से ही रही है, और इन्हीं अन्तर्मन में निहित विभिन्न प्रकार की चेष्टाओं ने अभिव्यक्ति का रूप धारण किया। इन अभिव्यक्तियों ने ही कभी काव्यकला, तो कभी मूर्तिकला, कभी चित्रकला तो कभी संगीत कला को जन्म दिया। परन्तु जब इन कलाओं में से भाव, भाषा, साहित्य, रस, छन्द, स्वर, लय, ताल व आंगिक अभिनय का सुन्दर सम्मिश्रण हुआ तो वही कला नाट्य के रूप में प्रस्फुटित हो उठी।

भारत में नाट्यविद्या के प्रमाणिक सूत्र हमें Hkjr Ñr ^ukV;'kkL=* ग्रन्थ से प्राप्त होते हैं। जिसमें स्पष्ट संकेत प्राप्त होता है कि ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय व अथर्ववेद से 'रस' लेकर नाट्य की रचना हुई। पाठ्य, गीत, अभिनय, रस यही चार तत्व नाट्य में माने जाते हें। अस्तु नाट्य में गीत, वाद्य व नृत्य का सुन्दर समावेश होता है।

प्राचीन समय से ही नाट्य में संगीत के समावेश के विधान प्राप्त होते हैं। संगीत के बिना नाट्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। संगीत, नाट्य का अभिन्न अंग है। संगीत एक ऐसी भाषा है जिसके द्वारा मनुष्य के हृदयगत भावों को व्यक्त किया जा सकता है।फलतः वर्तमान समय में भी नाट्य कला में संगीत, वाद्य व नृत्य का प्रयोग किया जाता है।

नाट्य में संगीत द्वारा नाट्यकथा का विस्तार होता है और नाट्य के विभिन्न रसों की सृष्टि होती है। अतः संगीत नाट्य का सजीवात्मक तत्व है जिसके बिना नाट्य निर्जीव है।

नाट्य शब्द का प्रधान अर्थ रस है। चतुर्विध अभिनय द्वारा मनुष्य जीवन के अनुकरण से रस–बोध कराके मनुष्य को ऊँचा उठाना, यही नाट्य का मूल उद्देश्य है।

ßu rTKkua u rfPNYia u lk fo|k u lk dykA
u lks ;ksxks u rRdeZ ukV;sfLeu ;é n`';rsAA

सभी ज्ञान, शिल्प विद्या और कला का नाट्य में समावेश हो ही जाता है। अस्तु इनका सम्मिलित रूप ही नाट्य है।

नाट्य विधा नाट्य शास्त्र से प्रस्फुटित हो कालक्रम के बढ़ते चक्र के साथ पुष्पित, पल्लवित होते–होते बहुरंगी छटा बिखेरती विकास के पथ पर अग्रसर होती रही। भारतीय नाट्य परम्परा में भारत के भिन्न–भिन्न प्रान्तों की सांस्कृतिक झलक समाहित होने लगी। हर प्रान्त में अपनी–अपनी अलग–अलग सभ्यता, संस्कृति, रीति–रिवाज, धार्मिक मान्यताएँ, पूजा पद्धति, सामाजिक परिवेश विद्यमान रहते हैं व इन सबका मिला जुला जो रूप सामने आया है वह लोक नाट्य के रूप में परिभाषित हुआ। लोक नाट्य दो शब्दों से मिलकर बना है – लोक + नाट्य।

ykd & ऐसा स्थान जिसका बोध प्राणी को हो अथवा जिसकी उसने कल्पना की हो। जैसे – देवलोक, ब्रह्मलोक, मृत्युलोक, परलोक आदि।

ukV;& jktiky fgUnh 'kCndks'k ds vuqlkj&नाट्य का अर्थ अभिनय कर्म से बताया गया है।

उपर्युक्त दोनों शब्दों के अर्थ को देखते हुए कह सकते हैं कि लोक नाट्य से तात्पर्य है–

ÞuR;kRed lEokn;qDr lkfgR;&:i tks tulemnk; dks eukjatu inku djus ds i/kku mnns'; dks ysdj jpk tk,Aþ

Mk- ukjk;.k nkl iqjkfgr लिखते है कि ^ykd* द्वारा अनुभूत भावनाओं का अनुकरणात्मक रूप लोकनाट्य है। इन लोक नाटकों के माध्यम से ग्रामीण अंचल में जीवनयापन करने वाला जनमानस आप बीती–जग बीती बातें कह–सुनकर कुछ समय के लिए सांसारिक–प्रपंच से मुक्ति प्राप्त कर मनोरंजनात्मक जीवन यापन कर लेता है।

उपरोक्त विद्वतजनों के विचारानुसार यह स्पष्ट ही हैकि लोकनाट्य का सम्बन्ध लोकनाटक से होता है, अतः लोक नाट्यों को लोक द्वारा लोकानुभूत भावनाओं का अनुकरणात्मक रूप कहना असंगत नहीं। वास्तव में लोकनाट्य, लोकमानसकी हर्षातिरेक में प्रस्फुटित भावनाओं का अभिन्यात्मक रूप ही है, जिसमें व्यंग का पुट सदैव विद्यमान रहता है तथा इनमें नृत्य, संगीत, अभिनय की त्रिवेणी बहती है।

भारतीय लोक नाट्य का सम्बन्ध उस निजता से है जो बहुरंगी होने के बावजूद भीतर से परस्पर घुली–मिली और गतिशील है। संस्कृति और लोक नाट्य की परम्परा परस्पर संवादी और विकासशील

है। इसमें जनजीवन का संघर्ष और उसकी आकांक्षाए समाहित है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण भारतीय लोकनाट्यों ने समकालीन रंगमंच को अधिक गतिशील, काव्यात्मक और समृद्ध बनाया।

v/; ;u dh vko';drk

भारत विविध रंग–रूप, वेश–भूषा, भाषा–शैली इत्यादि से समृद्ध भू–भाग है जिसके प्रत्येक प्रान्त की अपनी विशिष्ट परम्परा, संस्कृति रही है जिनका प्रभाव उनके प्रान्तों में विकसित कलाओं पर भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। यही कारण है कि भारत के प्रत्येक प्रान्त में नाट्य विधा के भी विविध रंग दिखाई देते हैं जैसे –आसाम का अंकिया नाटक, राजस्थान ख्याल (तमाशा), उत्तर प्रदेश का स्वांग, बंगाल का जात्रा इत्यादि। इसी तारतम्यता में यदि बुन्देलखण्ड में प्रचलित लोकनाट्य विधाओं पर दृष्टिपात करेंतो बुन्देलखण्ड जो कि उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश की सीमाओं से घिरा हुआ भू–भाग है जिसकीबोली बुन्देली है, इस अंचल की संस्कृति को बुन्देली संस्कृति की संज्ञा दी जाती है। बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति में इस अंचल के लोक–दर्शन, जनमानस के आदर्श, विश्वास तथा रीति–रिवाज, पर्व–संस्कार तथा मान्यताएं आदि समाहित है, जिनकी झलक इस प्रांत के लोकनाट्यों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। यहाँ के सुप्रसिद्ध कतिपय लोकनाट्यों में रावला,नौटंकी, स्वांग इत्यादि विशेष उल्लेखनीय है। जैसा कि पूर्व में ही उल्लेख किया जा चुका है कि नाट्य विद्या बिना संगीत के अपनी सम्पूर्णता को नहीं प्राप्त कर सकती। अस्तु, बुन्देलखण्डीलोक नाट्यों में भी गीत, वाद्य, नृत्य, लय, ताल व छन्द आदि का अनूठा सौन्दर्य बिखरा हुआ दिग्दर्शित होता है।

शोधकर्त्री चूंकि स्वयं भी इस प्रान्त से जुड़ी हुई है फलतः बुन्देलखण्ड में प्रचलित लोक नाट्यों के स्वरूप व उनकी विशेषताओं के साथ ही उनके सांगीतिक पक्ष की जानकारी प्राप्त करने की ओर उत्सुक हुई। फलस्वरूप इस सम्बन्ध में अधिक से अधिक जानकारी एकत्र करने हेतु सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया, जिनका विवरण निम्नवत् है –

lEcfU/kr lkfgR; dk lo{k.k

'kks/k izcU/k

Ø-la-	'kks/k izcU/k	'kks/kkFkhZ
1.	बुन्देलखण्डी लोकगीत शास्त्रीय संगीत के दृष्टिकोण से	आशा खरे
2.	बुन्देली लोकगीतों का शास्त्रीय अध्ययन	हर्ष कुमार द्विवेदी
3.	खड़ी बोली लोकनाट्य का अध्ययन	पद्मप्रकाश गुप्त
4.	छत्तीसगढ़ के लोकनाट्यों, प्रकाशित और अप्रकाशित का अध्ययन एवं विश्लेषण	तुमनलाल पटेल
5.	भारतीय लोकनाट्यों की पृष्ठभूमि में मालवा लोकनाट्य मंच	शिवकुमार भवसागर
6.	भोजपुरी लोकनाट्य और रंगमंच का अध्ययन	सुरेश तिवारी
7.	राजस्थानी एवं हिमाचली लोकनाट्य–परम्परा : एक तुलनात्मक अध्ययन	नारायण दास
8.	राजस्थानी लोकनाट्य एवं रंगमंच : एक अध्ययन	कमलेश माथुर
9.	हिन्दी लोकनाट्य की पृष्ठभूमि में स्वांग का अध्ययन	राम सिंह रावत
10.	हिन्दी साहित्य में गीति नाट्य का उद्भव और विकास	रमेश चन्द्र जैन

iqLrd

Ø-la-	iqLrd	ys[kd
1.	भारत का प्राचीन नाटक	वीरेन्द्र नारायण
2.	हिन्दी रंगमंच का उद्भव और विकास	डॉ. विश्वनाथ
3.	भारतीय रंगमंच और सिद्धान्त	डा. रघुवर दयाल वार्ष्णेय
4.	भारतीय नाट्य परम्परा और रंगभूमि	डॉ. मदन मोहन भारद्वाज
5.	मध्य प्रदेश का लोक नाट्य 'माच'	डॉ. शिवकुमार 'मधुर'
6.	हिमांचली लोकरंग	डॉ. नारायण दास पुरोहित
7.	भारतीय लोकनाट्य	वरिष्ठ नारायण त्रिपाठी
8.	बुन्देलखण्डी लोकगीतों का सांगीतिक तत्व	वीणा श्रीवास्तव
9.	लोकनाट्यों में संगीत	डॉ. ज्ञानवती वेद मेहता
10.	बुन्देलखण्ड के लोकगीत	श्री उमा शंकर शुक्ल
11.	बुन्देली लोक साहित्य परम्परा और इतिहास	प्रो. नर्मदा प्रसाद गुप्त

Ø-la-	if=dk;sa	lEiknd
1.	संगीत मासिक पत्रिका, अप्रैल 2012	डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग
2.	संगीत मासिक पत्रिका,दिसम्बर 2012	डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग
3.	संगीत मासिक पत्रिका,जुलाई 2015	डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग
4.	संगीत मासिक पत्रिका,मार्च 2016	डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग

उपर्युक्त समस्त प्रकाशित पाठ्य सामग्री एवं शोधकर्त्री के संज्ञान में आई अब तक प्राप्त जानकारी को दृष्टिगत रखते हुए यह स्पष्ट है कि यद्यपि बुन्देलखण्ड के प्रचलित कतिपय लोक नाट्यों

के विषय में जानकारी उपलब्ध है, साथ ही बुन्देलखण्ड में प्रचलित लोकगीत, लोकवाद्यों, लोक कलाकारों से सम्बन्धित पाठ्य सामग्री उपलब्ध है तथा इन लोकगीतों में प्रयुक्त भाषा आदि से सम्बन्धित जानकारी भी कुछ सीमा तक प्राप्त होती है।

लोक नाट्यों में प्रयुक्त गीत, वाद्य व नृत्यों के शास्त्रीय पक्ष से सम्बन्धित विवरण भी प्राप्त होते हैं। परन्तु फिर भी बुन्देलखण्डी लोक नाट्यों से सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त होनी अपेक्षित है। क्योंकि अन्वेषण ही सतत् प्रवाह व विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। अस्तु बुन्देलखण्डी लोक नाट्यों में प्रयुक्त लोक संगीत पर गहनतापूर्वक अध्ययन की आवश्यकता है। इसी आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्त्री ने निम्नलिखित विषय का चयन "c|Un|y[k.Mh ykdukV;k dk l|xhrijd v/;;uÞशोध कार्य हेतु किया है।

fo"k; dFku

Þc|Un|y[k.Mh ykdukV;k dk l|xhrijd v/;;uAÞ

leL;k e i;|Dr 'kCnk dh O;k[;k

¼1½ c|Un|y[k.M– बुन्देलखण्ड मध्य भारत का प्राचीन क्षेत्र है। इसका विस्तार मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश की सीमा से जुड़ा है। बुन्देली इस क्षेत्र की मुख्य बोली है।

¼2½ ykd & विश्व का कोई भाग (जैसे – देवलोक, ब्रम्हा लोक, मृत्युलोक)

¼3½ ukV; & रंगमंच पर अभिनय की जाने योग्य रचना

¼4½ l|xhr& मधुर ध्वनियों या स्वरों का विशिष्ट नियमों के अुनसार लय में होने वाला प्रस्फुटन (जैसे – कण्ठ संगीत, वाद्य संगीत)।

¼5½ ijd & प्रत्यय शब्द के अंत में लगकर अनेक अर्थ का बोधक (जैसे – सौन्दर्यपरक, अध्यात्मपरक, संगीतपरक)।

v;;u d mn~n';

- बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- बुन्देलखण्ड में प्रचलित लोकनाट्यों का अध्ययन करना।
- बुन्देलखण्डी लोकनाट्यों का संगीतपरक अध्ययनकरना।

- बुन्देलखण्ड में प्रचलित लोक संगीत का अध्ययनकरना।
- बुन्देलखण्ड के लोकनाट्यों में हो रहे परिवर्तनों का अध्ययनकरना।

ifjlhekdu

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध गहनतापूर्वक व समय सीमा के अन्तर्गत पूर्ण किया जा सके अस्तु शोधकार्य बुन्देलखण्ड के क्षेत्र– झाँसी, जालौन व छतरपुर में प्रचलित लोक नाट्यों (स्वांग, नौटंकी, रावला) के संगीतपरक अध्ययन तक ही सीमित रहेगा।

v/;;u dh fof/k

साक्षात्कार, सर्वेक्षणात्मक, वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, प्रश्नावली विधि।

v/;;u ds midj.k

दृश्य–श्रव्य सामग्री (कम्प्यूटर, इंटरनेट, टेपरिकॉर्डर, लैपटॉप, मोबाइल)

v/;;u ds L=ksr

पुस्तकालय, पत्र–पत्रिकायें तथा कलाकारों से साक्षात्कार द्वारा।

v/;k;ksa dk foHkktu

- Hkwfedk
- izFke v/;k; % cqUnsy[k.M dk ifjp;kRed v/;;uA

  (क) ऐतिहासिक अध्ययन।

  (ख) भौगोलिक अध्ययन।

  (ग) सांस्कृतिक अध्ययन।
- f}rh; v/;k; % cqUnsy[k.M ds izpfyr yksdukV~;ksa dk v/;;uA
- r`rh; v/;k; % cqUnsy[k.M esa izpfyr yksdlaxhrdk v/;;uA
- prqFkZ v/;k;% cqUnsy[k.Mh yksdukV~;ksa dk laxhrijd v/;;uA

  (क) साहित्य की दृष्टि से।

  (ख) संगीत की दृष्टि से।

➢ ipe v/;k; % cUny[k.M d ykdukV;k e ifjorlu'khyrk & v/;;uA

➢ mi lgkj

'kk/k dk egRo

लोक संगीत जनमानस में रचा बसा वह मधुर संगीत है जिसमें गीत, वाद्य, नृत्य प्रस्फुटित होते हैं। जो कि मात्र सामाजिक दृष्टि से ही नहीं अपितु सांस्कृतिक, ऐतिहासिक आदि दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

सर्वेक्षण की दृष्टि से जब शोधकर्त्री ने दृष्टिपात किया तो पाया कि बुन्देलखण्ड के लोक गीत व लोक संगीत आदि से सम्बन्धित तो कार्य किए जा रहे हैं परन्तु लोकनाट्यों के मंचन में यह किस प्रकार सहायक है, लोकनाट्यों के रस व सौन्दर्य की दृष्टि से इनकी क्या भूमिका है व लोक नाट्यों में निहित संगीत वहाँ की लोक नाट्य परम्परा को किस प्रकार आगे बढ़ाने में सहायक है। इन सभी बिन्दुओं को प्रस्तुत शोधकार्य के माध्यम से प्रकाश में लाया जा सकेगा व भविष्य में प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से जहाँ संगीत विद्यार्थियों को इस क्षेत्र की विस्तृत जानकारी प्राप्त होगी वहीं शोध के नवीन पक्ष भी प्रदर्शित होने में सहायता प्राप्त हो सकती है।

अस्तु यदि इस प्रयास से संगीत समाज को लाभ पहुँचता है व संगीत विद्यार्थियों को अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त होती है तो शोधकर्त्री का यह प्रयास सफल सिद्ध होगा।

lUnHk xUFk lph

'kk/k ic/k

Ø0 l0	'kk/kkFkh dk uke	'kk/k ic/k	fo'ofo|ky;	lu
1	पटेल तुमनलाल	छत्तीसगढ़ के लोक नाट्यों, प्रकाशित और अप्रकाशित का अध्ययन एवं विश्लेषण	भातखण्डे संगीत विद्यापीठ, लखनऊ	1986
2	खरे आशा	बुंदेलखंडी लोकगीत शास्त्रीय संगीत के दृष्टिकोण से	रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर	1983
3	द्विवेदी हर्ष कुमार	बुदेंली लोकगीतों का शास्त्रीय अध्ययन	इन्द्राकला संगीत वि”वविद्याालय, खैरागढ़	1993
4	मुखर्जी सच्चिदानन्द	भारतीय नाट्यलोक	कलकत्ता वि”वविद्यालय	1954

iqLrdsa

Øo0 la0	ys[kd dk uke	iqLrd dk uke	izdk'kd o izdk'ku o"kZ
1.	श्रीवास्तव डॉ वीणा	बुन्देलखण्डी लोकगीतों का सांगीतिक तत्व	राधा पब्लिकेशन,प्रथम संस्करण, 2004
2.	बंसल डा0 परमानन्द	हिमांचली लोकनाट्य धज्जा सांस्कृतिक एवं सांगीतिक अध्ययन	संजय प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2005
3.	मित्तल अंजली	भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संगीत	कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रथम संस्करण, 2003
4.	गुप्त प्रो. नर्मदा प्रसाद	बुन्देली लोक साहित्य परम्परा और इतिहास	मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला,– प्रथम संस्करण, 2001
5.	अग्रवाल हरीशचंद्र	नाटक के सौ बरस	शिल्पायन,संस्करण, 2001
6.	लाल डा0 रामनारायण	हिन्दी साहित्य मे प्रतीक नाटक	आशा प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2000
7.	शुक्ल डॉ. धीरेन्द्र	हिन्दी नाट्य परिदृश्य	वी.के. शाहदरा, प्रथम संस्करण, 2004

if=dk;sa

Øo-la-	if=dk;sa	lEiknd
1.	संगीत मासिक पत्रिका,अप्रैल 2002	डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग
2.	संगीत मासिक पत्रिका,दिसम्बर 2012	डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग
3.	संगीत मासिक पत्रिका,जुलाई 2015	डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग
4.	संगीत मासिक पत्रिका,मार्च 2016	डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग

dks'k xzUFk

Øo0 la0	ys[kd dk uke	dks'k dk uke	izdk'kd o izdk'ku
1.	बाहरी हरदेव	राजपाल हिन्दी शब्दकोश	राजपाल एण्ड सन्स, 2004
2.	कुमार कुसुम	बहत् सामांतर कोश	नेशनल बुक ट्रस्ट, प्रथम संस्करण, 2013
3.	दीक्षित कृष्ण कान्त	मानक विशाल हिन्दी शब्द कोश	कमल प्रकाशन